आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:07-11-14

हम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाकर, हमें मन-बुद्धि की बेहद की यात्रा सिखलाने वाले, बेहद के रुहानी बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आये है तुम्हें रुहानी हुनर सिखलाने, जिस हुनर से तुम सूर्य-चांद से भी पार शान्तिधाम में जाते हो.

बाबा ने हमें यह भी बताया है कि यह साइन्स भी साइलेन्स की शक्ति से ही पैदा हुई हैं. आज-कल की कलयुगी दुनिया में जो भौतिक सुख के मायावी साधन है वह सब साइन्स के घमण्ड से बने हैं. साइन्स तो सतयुग में भी होगी लेकिन वहॉ रिफाइन् साइन्स होगी. जब की कलियुग में अभी मनुष्यों जो भी साइन्स के साधनों का उपयोग करते है उसके पीछे मनुष्यों की आपस में चड़सा-चड़सी या ईर्षा या दिखावा या देह-अभिमान के वश होकर ही करते हैं. जैसे की एक देश चांद पर जाने में सफल होता है तो दूसरों को दिखाता है कि हम यह-यह कर सकते हैं. दूसरा आज-कल की साइन्स के साधनों के उपयोग से प्रकृति पर या अन्य मनुष्यों को नुकसान जरूर होता है जैसे कि कोलसे के पावर-प्लान्टों का धुवाँ जो निकलता है उसे सारी पृथ्वी पर CO2 का प्रमाण बढ़ रहा है. वैसे ही आज-कल साइन्स से बनी कोई भी चीज ऐसी नहीं है जिसे उपयोग करने से मनुष्य या प्रकृति को नुकसान न पहुँचता हो. सतयुग में देवी-देवताये जो लाइट का उपयोग करते है वह भी मणि से बनी होती है जो किसी भी प्रकार से मनुष्य या प्रकृति को हानि-कारक नहीं होगी. ऐसे ही सतयुग में प्लेन आदि भी सोलर शक्ति से चलने वाले होते हैं.

बाबा ने आज की मुरली में कहा की वह है साइन्स घमंडी और तुम हो साइलेन्स घमंडी. वह साइन्स की शक्ति से एक-दूसरे पर रोप जमाते है जब की हम साईलेन्स की शक्ति से सारे विश्व पर अपनी राजाई स्थापन करते हैं. बाबा की आज मुरली से साइन्स घमंडी और साइलेन्स घमंडी पर पॉइन्टस निकाल कर पढ़ेंगे.

- वह लोग चांद पर जाने का प्रयत्न करते है, कितना खर्चा-आदि करते है. तुम तो सूर्य-चांद से भी पार जाते हो, एकदम मूलवतन में.

- वह लोग ऊपर में जाते है तो बहुत पैसा, लाखों सौगातें आदि मिलती हैं. शरीर का जोखिम उठाकर जाते है वह है साइन्स घमंडी. तुम्हारे पास है साइलेन्स का घमंड. तुम जानते हो हम आत्मा अपने शान्तिधाम-ब्रहमाण्ड में जाते है. आत्मा ही सबकुछ करती हैं.

- उन्हों की आत्मा ही शरीर के साथ ऊपर जाती है. बड़ा खौफनाक है. डरते भी है ऊपर से गिरे तो जान खत्म हो जायेगी. वह है जिस्मानी हुनर. बाप तुमको रुहानी हुनर सिखलाते है. इस हुनर सीखने से तुमको कितनी बड़ी प्राइज मिलती है. 21 जन्मो की प्राइज मिलती है. यह बाप तुमको प्राइज देते है.

- वह कोशिश करते है ऊपर जाकर देखे चंद्रमा में क्या है, स्टार में क्या है? तुम बच्चे जानते हो यह तो इस माण्डवे की बतिया है. यह है बेहद की दुनिया. इसमें यह सूर्य, चांद और सितारे रोशनी देने वाले है. मनुष्य फिर समझते है सूर्य-चांद यह सब देवताये है. पर यह देवताये तो है नहीं. अभी तुम समझते हो कि बाप कैसे हमको मनुष्य से देवता बनाते है. शिवबाबा है ज्ञान सूर्य, ब्रहमाबाबा है ज्ञान-चंद्र और बच्चे सब है ज्ञान-सितारे. ज्ञान से ही तुम्हारी सद्गति होती है.

- वह कहते है हम चांद पर जाकर रहेंगे. कितना माथा मारते है. बहादुरी दिखाते हैं. इतने मल्टी-मिलियन माइल ऊपर जाते है लेकिन उन्हों की आशा पूर्ण नहीं होती है (चांद पर रहने कि) पर तुम्हारी आशा पूर्ण हो जाती है (जब हम सम्पूर्ण बन जाते है तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे और फिर सतयुग में आते हैं). उनका है झूठा जिस्मानी घमंड, तुम्हारा है रुहानी घमंड.

- उन्हों की है जिस्मानी ताकत और तुम्हारी है रुहानी ताकत. वह जिस्मानी ताकत से कहा तक जायेंगे. चांद, सितारों तक पहुँचेंगे और लड़ाई शुरु हो जायेगी. फिर वह सब खत्म हो जायेंगे. उन्हों का हुनर यहाँ तक ही खत्म हो जायेगा. वह है जिस्मानी हाईऐस्ट हुनर, तुम्हारी है रुहानी हाईऐस्ट हुनर. तुम्हारे हुनर से तुम शांतिधाम में जाते हो.

ॐ शांति.